कुमार जीवन - 61

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमार जीवन भी **लकी जीवन** है। क्योंकि **उल्टी सीढ़ी चढ़ने से बच गये।** कभी संकल्प तो नहीं आता है - उल्टी सीढ़ी चढ़ने का! **चढ़ने वाले भी उतर रहे हैं। सभी प्रवृत्ति वाले भी अपने को कुमार-कुमारी कहलाते हैं ना।** तो सीढ़ी उतरे ना! तो सदा अपने इस श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में रखो।

➳ _ ➳ कुमार जीवन अर्थात् बन्धनों से बचने की जीवन। नहीं तो देखो कितने बन्धनों में होते हैं। तो बन्धनों में खिंचने से बच गये। मन से भी स्वतन्त्र, सम्बन्ध से भी स्वतन्त्र। **कुमार जीवन है ही - "स्वतन्त्र"।**

➳ _ ➳ **कभी स्वप्न में भी ख्याल तो नहीं आता - थोड़ा कोई सहयोगी मिल जाए! कोई साथी मिल जाए! बीमारी में मदद हो जाए, ऐसे कभी सोचते हो! बिल्कुल ख्याल नहीं आता? कुमार जीवन - अर्थात् सदा उड़ते पंछी, बंधन में फँसे हुए नहीं। कभी भी कोई संकल्प न आवे। सदा निर्बन्धन हो तीव्रगति से आगे बढ़ते चलो। (15-01-1986)**

➢➢ उल्टी सीडी चडने वाले भी उतर रहे हैं

➳ _ ➳ काम

→ कांटो की कुर्सी है

→ जो विकारों में नहीं गया है :-

- अगर उसमें ज्ञान बड़ा दिया जाए तो
  - ▸ उसकी इच्छाएं विलीन हो जायेंगी
- **आपके जीवन का एकमात्र लक्ष्य रह जाता है**
  - ▸ **परमात्म प्रेम में डूब जाना**

→ जो विकारों में गया है :-

- उसके चारों और बेडिया ही बेडिया हैं
- उसे स्मृतियाँ मिटाने का डबल पुरुषार्थ करना होगा
- अगर आपके युगल ने आपका सहयोगी बनने से इनकार कर दिया तो
  - ▸ तो आपको इस आध्यात्मिक पथ पर बहुत संघर्ष करना होगा
- और विकारों की आंधी आने पर
  - ▸ उसके विकारों में फिर से डूब जाने की समभावना भी बड जायेगी

- किसी देहधारी को खुश करने में चाहे पूरा जीवन लगा दो
  - पर वो खुश कभी होता नहीं है
- "तोड़ निभाना" और "युक्तियुक्त" जैसे शब्दों का MISUSE होने लगता है
- जब किसी देहधारी को सहारा बना लेते हो
  - तो ऊपर की मदद रुक जाती है
- जब सम्पूरण रूप से उस एक पर निर्भर हो जाते हो
  - तो उस एक की मदद मिलती है
- आपका देहधारी साथी आपका सहयोगी नहीं
  - बल्कि बंधन है आपके पुरुषार्थ में

➳ _ ➳ क्रोध

→ आग की कुर्सी है

➢➢ आस्था / अवस्था / व्यवस्था

➳ _ ➳ आस्था से अवस्था बनती है

➳ _ ➳ अवस्था से व्यवस्था बनती है